BA Part III (Hons/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

निर्धनता का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Poverty)

निर्धनता को निर्धारित एवं परिभाषित करना सरल कार्य नहीं है। केवल आर्थिक आधारों पर निर्धनता की पर्याप्त परिभाषा नहीं दी जा सकती। बल्कि आय होने के बावजूद भी अनुपयुक्त व्यय एवं उच्च मूल्य दर के कारण व्यक्ति जीविका के लिए आवश्यक वस्तुएं प्राप्त करने से वंचित रहता है। अतः सामान्य शब्दों में निर्धनता को व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में असमर्थता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

माइकल हैरिंगटन के अनुसार, "स्वास्थ्य, मकान, भोजन, शिक्षा व मनोरंजन के उन स्तरों से वंचित होना, जो समाज के समकालीन प्रौद्योगिकी, विश्वासों व मूल्यों के अनुरूप है।"

गिलिन एवं गिलिन ने सोशियल पैथोलॉजी में लिखा है: "निर्धनता वह दशा है जिसमें कोई व्यक्ति या तो अपनी अपर्याप्त आय अथवा अविवेकपूर्ण व्यय के कारण अपने जीवन स्तर को इतना ऊँचा नहीं बनाए रखता, जो उसकी मानसिक व शारीरिक कुशलता को बनाए रख सके और उसे तथा उसके प्राकृतिक आश्रितों को समाज के जीवन

स्तर के समान उपयोगी ढंग से काम करने योग्य बना रख सके, निर्धनता कहलाती है।"

गिलिन एवं गिलिन (In Introduction to Sociology) के अनुसार "निर्धनता व्यक्ति के जीवन की वह दशा है, जिसमें वह या तो अपनी आय अपर्याप्तता या अन्य व्यय एवं फिजूलखर्ची के कारण एक ऐसा जीवन स्तर रख पाने में असमर्थ होता है जिसमें न केवल उसकी ही शारीरिक तथा मानसिक क्षमता एवं कार्यकुशलता बनी रहे वरन् उसके ऊपर आश्रित रहने वाले व्यक्ति भी उस समाज में रहन सहन के स्तर के अनुरूप अपना जीवन व्यतीत करके लाभदायक रूप से अपना कार्य संपादित कर सकें जिस समाज के वे सदस्य हैं।